This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

गधा पुराण

;जन नाट्य मंचऋ दिसंबर १९९८, १३ कलाकार, ४५ मिनट।द्ध

पात्र विभाजन

१. गुरु गोल
२. राजा गधाधर
३. बूढ़ा
४. गधा
५. सिपाही १
६. सिपाही २
७. मंत्री १/लाला/कोरस
८. मंत्री २/कोरस
९. मंत्री ३/कोरस
१०. मंत्री ४/कोरस
११. मंत्री ५/जासूस/कोरस
१२. बाक़ी पात्र कोरस

कोरस : मुन्ना गुड़िया ताऊ और दादी, सुनो कहानी सीधी सादी
नगर में होती एक मुनादी, हँसने पर है रोक लगा दी
सुनकर उसको हँसते सारे हा हा हा हा हा
सुनकर उसको हँसते सारे हा हा हा हा हा
सुनकर उसको हँसते सारे हा हा हा हा हा
सुनो कहानी इक राजा की, इक राजा है, अक़्ल का मोटा
ताज बड़ा है सिर है छोटा, पहने है नित नया मुखौटा
देख के उसको हँसते सारे हा हा हा हा हा
देख के उसको हँसते सारे हा हा हा हा हा
देख के उसको हँसते सारे हा हा हा
;हँसते हुए राजा का प्रवेश। गुरु गोल और मंत्री साथ हैं।द्ध

गुरु गोल : आर्य गधाधर

गधाधर : हां गुरु गोल

गुरु गोल : आज से तुम महाराज गधाधर हो गए हो। देखो, देखो ये अपना चमकता-दमकता ताज देखो। देखो प्राचीनतम देश का महानतम ताज। *;दूर इशारा करता है।द्ध* तुम्हें क्या दिखाई देता है?

गधाधर : एक महान विशाल राष्ट्र।

गुरु गोल : उस राष्ट्र में क्या दिखता है?

गधाधर : एक तंत्र, एक मंत्र, एक धर्म, एक संस्कृति, एक राष्ट्र, एक ताज और एक महाराज।

गुरु गोल : और क्या दिखता है?

गधाधर : राजधानी

गुरु गोल : राजधानी में क्या दिखता है?

गधाधर : राजपथ

गुरु गोल : राजपथ पर?

गधाधर : राजमहल

गुरु गोल : राजमहल में क्या दिखता है?

गधाधर : राज सिंहासन

गुरु गोल : राज सिंहासन पर?

गधाधर : चमकता-दमकता-जगमगाता ताज *;हँसता है।द्ध*

गुरु गोल : इस ताज को पहनकर सबसे पहले तुम क्या करोगे?

गधाधर : इस ताज को पहनकर क्या करूंगा? सबसे पहले क्या करूं गुरु गोल? मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा गुरु गोल। मस्जिद तुड़वाऊंगा। उसकी जगह मंदिर बनवाऊंगा।

गुरु गोल : बनवा दो।

गधाधर : घुसपैठियों को भगाऊंगा।

गुरु गोल : भगा दो।

गधाधर : पिच खुदवाऊंगा।

गुरु गोल : खुदवा दो।

गधाधर : अस्त्र फुड़वाऊंगा।

गुरु गोल : फुड़वा दो।

गधाधर : क्या करूं, करने को इतना कुछ और मैं अदना सा। इतनी सारी घास और मैं अकेला।

गुरु गोल : अब यह ताज हमारा है, यह राज हमारा है, अब यह साम्राज्य हमारा है। हा हा हा *;विशाल आकार का ताज गधाधर को पहनाता है।द्ध*

गधाधर : गुरु गोल आपने मुझे यह क्या पहना दिया? यह ताज बहुत बड़ा है।

गुरु गोल : यह ताज बड़ा नहीं है मूर्ख, तेरा सिर छोटा है।

This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

गधाधर : अगर मेरा सिर छोटा है तो मुझे छोटा ताज लाकर दीजिए।

गुरु गोल : छोटा ताज लेकर तू अपने साम्राज्य की सीमा को छोटा करना चाहता है? मूर्ख! जितना महान देश उतना बड़ा ताज। अपने आकार को बड़ा कर, अपने सिर को बड़ा कर।

गधाधर : सिर को कैसे बड़ा करूं ? मेरा सिर तो बचपन से ही इतना छोटा है।

गुरु गोल : इसके लिए हम हैं न आर्य गधा। हम देख पा रहे हैं कि एक दिन तुम्हारा सिर इतना बड़ा हो जाएगा कि यह ताज उसके लिए छोटा पड़ेगा। निश्चिंत रहो आर्य गधा, निश्चिंत रहो।

गधाधर : कैसे रहूं निश्चिंत गुरु गोल। जबकि ताज है बड़ा और सिर है छोटा। कैसे रहूं निश्चिंत जबकि ताज की विशालता के सामने मेरा व्यक्तित्व है बौना? कैसे रहूं निश्चिंत जबकि यह ताज हर क्षण मेरे सिर से फिसलता रहता है? कैसे रहूं निश्चिंत जबकि मैं नहीं जानता कि कब तक सहयोगियों का साथ है मेरा? *;गाना गाता है।ध्द*

कैसे रहूं निश्चिंत, कैसे रहूं निश्चिंत
गुरु जी संशय ने घेरा
कैसे रहूं निश्चिंत यह ताज हरदम रहेगा मेरा
कैसे रहूं निश्चिंत कि अब भी गदहे घास हैं खाते
बादल मेह बरसाते
होता रोज़ सवेरा, एक ही प्रोब्लम मेरा
कैसे रहूं निश्चिंत गुरुजी कैसे रहूं निश्चिंत

;राजा, गुरु गोल और मंत्रियों का प्रस्थान। कोरस का प्रवेश।ध्द

कोरस : मुन्ना, गुड़िया, ताऊ और दादी, सुनो कहानी सीधी-सादी
सुनो कहानी एक गधे की, एक गधा है भूखा-प्यासा
अड़ियल है पर नहीं उदासा, करता है नित नया तमाशा
देख के उसको हँसते सारे हा हा हा हा हा
देख के उसको हँसते सारे हा हा हा हा हा
देख के उसको हँसते सारे हा हा हा
;बुड्ढे और गधे का प्रवेश।ध्द

बुड्ढा : मर-मर-मर। हिलियो मत अब वहां से। हाथ पांव तुझे चलाने नहीं हैं। खाने को चाहिए छप्पन भोग। अब चलेगा भी मेरे दुश्मन या बाज़ार जाने को तेरे लिए पालकी मँगाऊं! मेरे बच्चे मुझे तंग मत किया कर। अरे बाज़ार को देर हो रही है।

लाला : ओ बुड्ढे कालंघूट चलेगा।

बुड्ढा : काहे नहीं जाएंगे हुज़ूर।

लाला : यह बोरा ले जाना है। बोल कित्ते पैसे लेगा?

बुड्ढा : पांच कोस तो होगा?

लाला : हां पांच कोस है।

बुड्ढा : तो आप दस रुपए दे देना।

लाला : पांच कोस है, पांच रुपए दूंगा।

बुड्ढा : पांच कोस बहुत होते हैं हुज़ूर

लाला : पांच रुपए भी बहुत होते हैं।

बुड्ढा : ए मेरे बच्चे पांच रुपए में चलेगा क्या? *;गधा सिर हिलाता है।ध्द* चल ठीक है।

लाला : उठा ले बोरा। देर हो रही हैऋ आख़िरी बस निकल गई तो मैं घर नहीं जा पाऊंगा।

बुड्ढा : आ जा, आ जा। ज़्यादा दूर ना है पांच कोस है आ जा।

बुड्ढा : चल, चल मेरे बच्चे। ए तू वहीं पर क्यों खड़ा है? देख ऐसे ना अड़ा कर। देख बोहनी का टाइम है। यह नहीं जाएगा हुज़ूर बड़ा अड़ियल मिजाज़ है। एक बार अड़ गया तो अड़ गया। यह नहीं जाएगा। *;बुड्ढा गधे को फुसलाता है, धमकाता है, खींचता है मगर गधा हिलता नहीं।ध्द*

लाला : लातों के भूत बातों से नहीं मानते। मार ससुरे के दो लात।

बुड्ढा : ए मेरे गधे को हाथ नहीं लगाना।

लाला : अच्छा! तेरा गधा तो चांदी का है। हीरे लगे हैं इसमें, खराब हो जाएंगे। नहीं लगाते तेरे गधे को हाथ। ए छोकरे कालंघूट चलेगा। यह बोरा ले जाना है। ढाई रुपए दूंगा। हाथ नहीं लगाना तेरे गधे में तो हीरे लगे हैं न, हाथ नहीं लगाना। *;लाला जाता है।ध्द*

बुड्ढा : देखा। वो लौंडा ले गया वो भी आधे दाम में। तुझे तो लदाई ले जाते मरी आती है। अब चल, आ जा। *;गधा खड़ा रहता है।ध्द* चरागाह जा रहा हूं। *;गधा चलने लगता है।ध्द* हां, खाने के नाम पे तो ठुमक-ठुमक के चल पड़ा। काम करते हुए मरी आती है। अब चल तुझे घास चराकर लाऊं। *;गधा और बुड्ढा एक चक्कर लगाते हैं।ध्द* ए मेरे बच्चे आज तो चरागाह में एक भी जानवर नज़र नहीं आ रहा, आज तो पूरा चरागाह खाली पड़ा हुआ है। ऐसा लग रहा है महाराज ने यह चरागाह ख़ास तेरे लिए बनवाई हो। पिछले हफ़्ते जब हम यहां आए थे तो कितने ढोर डंगर थे, पांव रखने की जगह भी न थी, और आज देख□इतनी सारी घास और तू अकेला।

इतनी सारी घास तू अकेला,
नरम-नरम यह घास तू अकेला
मीठी-मीठी घास और तू अकेला,
खा ले इसको तू समझ के केला

एक आदमी : ओ बाबा। अपने गधे को ले के निकल लो यहां से। राजा के सिपाही आते होंगे।

बुड्ढा : राजा के सिपाही हमारा क्या करेंगे बेटा।

एक आदमी : राजा ने यह पूरी चरागाह एक फ़िरंगी कंपनी को बेच दी है।

बुड्ढा : फ़िरंगी कंपनी क्या करेगी इस चरागाह का?

एक आदमी : फ़िरंगी कंपनी आएगी, घास काटेगी, उसे सुखाएगी, उसे पॉलिथिन में बंद करेगी और बाज़ार में छोड़ देगी। तू बाज़ार से वो खरीदियो। उस पॉलिथिन को खोलियो, उसमें थोड़ा पानी मिलाइयो और गधे को खिलाइयो। फिर देखियो तेरे गधे में क्या ताक़त आती है।

बुड्ढा : मेरे बच्चे। गधे को घास खिलाने के लिए इतना बड़ा झंझट क्यों। मेरा गधा ऐसे ही न खा ले घास।

एक आदमी : एक बात बता बाबा, तूने इकनॉमिक पॉलिसी पढ़ी है?

बुड्ढा : यह क्या होता है बेटा?

एक आदमी : राजा के सिपाही आ रहे हैं। निकल ले यहां से।

बुड्ढा : *;गधे सेद्ध* देख मेरे बच्चे राजा के सिपाही यहीं आ रहे हैं। इससे पहले कि सिपाही चरागाह तक पहुंचें अपन दूर निकल चलते हैं। चल-चल। *;गधे के साथ प्रस्थान, सिपाही आते हैं।द्ध*

एक आदमी : *;सिपाही सेद्ध* एक बूढ़ा था जी यहां पर।

सिपाही १ : अच्छा।

एक आदमी : उसके साथ गधा भी था।

सिपाही १ : अच्छा!

एक आदमी : घास खा रहा था। मैंने भगा दिया। मैं चलूं जी।

;दूसरे सिपाही को बुलाता है। आदमी को मारते हैं और ले जाते हैं। राजा और मंत्रियों का प्रवेश मंत्री ५ ने ताज को अपने सिर पर पकड़ा है।द्ध

गधाधर : मेरा ताज, मेरा ताज, मेरा ताज बड़ा क्यों है ? मेरा सिर छोटा क्यों है? उल्ले के पट्ठो तुमने कहा था न, जा के मंदिर बनाओ। हमने भव्य से भव्य मंदिर बना दिया। लेकिन हुआ क्या? मेरा ताज बड़ा का बड़ा रह गया, कमीनो, तुमने कहा था अस्त्र बनाओ। हमने एक नहीं पांच-पांच अस्त्र बनाए, हुआ क्या? मेरा ताज बड़ा का बड़ा रह गया और मेरा सिर छोटा। सूअर के बच्चे, तुमने कहा था न पिच खोदो। हमने दफ़्तर भी तोड़ दिए। क्या हुआ? मेरा ताज बड़ा का बड़ा और मेरा सिर छोटा रह गया। *;तुमने कहा था पड़ोसियों से झगड़े करो। हमने अपने सारे पड़ोसियों से झगड़े कर लिए। क्या हुआ? मेरा ताज बड़ा का बड़ा रह गया और मेरा सिर छोटा?द्ध*

मंत्री ५ : महाराज

मंत्री १ : महाराज आवाज़ इस ताज में से आई है।

मंत्री २ : आपका ताज बोलने लगा महाराज।

मंत्री ३ : बोलता है तो समझता भी होगा।

मंत्री ४ : इससे कहिए महाराज यह आपकी आज्ञा माने और फ़ौरन छोटा हो जाए।

गधाधर : बेवकूफ़ जितना छोटा ताज उतना छोटा साम्राज्य। कुछ ऐसा करो कि हमारा सिर बड़ा हो जाए।

मंत्री ५ : महाराज मैं वही तो कहना चाहता हूं। अगर इस ताज को मेरे ऊपर से उठाएं तो मैं कुछ बोलूं।

गधाधर : बोलो

मंत्री ५ : महाराज अमरीका में ऐसा पाउडर ईजाद हुआ है जिसको दूध में घोलकर पीने से आदमी का सिर बड़ा हो जाता है। आज तक तीस करोड़ बच्चों को पिलाया जा चुका है महाराज और सबका सिर बड़ा हो गया है महाराज।

गधाधर : तुम्हें भी दिया जा चुका है?

मंत्री ५ : तभी तो इतना बड़ा हूं महाराज ।

गधाधर : हमें भी दो।

मंत्री २ : आपकी तौहीन कर रहा है महाराज। आपको बच्चा बता रहा है। मैं एक ऐसे कम्प्यूटर के बारे में जानती हूं महाराज जिस पर खेलने से आपका सिर बड़ा हो जाएगा।

मंत्री १ : क्या बेवकूफ़ी भरा आइडिया महाराज को दे रही हो। महाराज विदेशी कंपनी बैन-बैन ने एक ऐसा चश्मा बनाया है जिसको पहनकर देखने से हर चीज़ बड़ी नज़र आती है। आप यह चश्मा पब्लिक के लिए ज़रूरी कर दीजिए। जो भी चश्मा पहनकर आपको देखेगा, आपका सिर बड़ा-बड़ा दिखेगा।

मंत्री ४ : गैंडे के हारमोन आपके ख़ून में इंजैक्ट कर देने चाहिए। जिससे आपका सिर गैंडे जैसा हो जाएगा। ताज आपको फ़िट आएगा।

मंत्री ३ : हमेशा आप उल्टी-सीधी बातें करते हैं। महाराज गैंडा थोड़े ही ना है। महाराज, आप विलायती शैम्पू इस्तेमाल कीजिए, जो मैं करती हूं। उससे आपके बाल घने और फुरफुरे हो जाएंगे और ताज आपको फ़िट आ जाएगा। *;गुरु गोल आते हैं।द्ध*

गुरु गोल : मूर्ख

गधाधर : मूर्ख

गुरु गोल : अपने आकार को बड़ा करने का तात्पर्य समझ। अच्छा यह बता कि वह द्रोणपुत्र अश्वत्थामा बड़ा था या वह हाथी?

गधाधर : हाथी *;सभी मंत्री महाराज की तारीफ़ करते हैं।द्ध*

गुरु गोल : अक़्ल बड़ी या भैंस?

गधाधर : भैंस *;सभी मंत्री तारीफ़ करते हैं।द्ध*

गुरु गोल : मूर्ख आकार को बड़ा करने का मतलब होता है लोगों के दिलो दिमाग़ पर छा जाना। उनके ज़हन में समा जाना। इस तरह यह लोग हँसते-रोते, उठते-बैठते, खाते-पीते,

हगते-मूतते केवल तेरे बारे में सोचें।

मंत्री ५ : महाराज एक आइडिया। क्यों न आपकी एक विशालकाय तस्वीर शहर के हर चौराहे पर लगा दी जाए। ताकि जनता हर समय आप ही आपको देखे।

मंत्री २ : हां महाराज, शहर की सड़कों का नाम आपके गुरु के, गुरु के चेलों के और चेलों के चपाटों के नाम पर रख दिया जाए।

मंत्री ४ : महाराज सरकारी अमलों में उन्हीं को भर्ती किया जाए जो आपके और गुरु गोल का गुणगान करते हों।

मंत्री २ : महाराज एक ऐसी वंदना, एक ऐसे मंत्र, एक ऐसे नारे को ईजाद किया जाए जिसका हर काम करने से पहले उच्चारण हो।

मंत्री ३ : महाराज इतिहास की पुस्तकों से सब बकवास हटाकर उनकी जगह आपके ख़ूबसूरत रंगीन चित्र लगा दिए जाएं।

गधाधर : जाओ! इतिहास की किताबों में हमारे रंगीन ख़ूबसूरत चित्र लगवा दो। शहर के हर चौराहे पर हमारी विशालकाय तस्वीर लगवा दो। *;राजा गीत गाता है। मंत्री मुंह से म्यूज़िक निकालते हैं।द्ध*

ये ख़बर छपवा दो अख़बार में, टैं रें रा
पोस्टर लगवा दो दीवार पे, टैं रें रा
ये राजा, इनका सिर
ये राजा इनका सिर अब भईया फ़िट हो गया ताज में।

गधाधर : *;हँसता है।द्ध* जाओ जाकर ऐलान कर दो कि हमारी सवारी निकलने वाली है। जाओ। *;राजा और मंत्री जाते हैं। कोरस का प्रवेश।द्ध*

कोरस का गाना : विशालकाय, विराट बु(, सर्वभुतेषू, शत्रुहंता राजा आ रहे हैं।
वज्रधारी, अजानबाहु, जाति गौरव, बलअनंता राजा आ रहे हैं।

कोरस १ : उस दिन मैंने कजरी की अम्मा से कहा कि देख-देख राजा की सवारी निकलने जा रही है। चल सिलक की साड़ी पहन कर दोनों देखने जाएंगे।

कोरस २ : मत पूछिए पंद्रह दिन पहले से ही टी. वी. पर हर आधे घंटे में इश्तिहार आ रहे थे कि 'राजा की सवारी आएगी–राजा की सवारी आएगी।'

कोरस ३ : मैंने रेडियो पर सुना राजा की सवारी राजमहल से निकलकर यमुना के पुश्ते कुण्डे वाले से होकर टाउन हॉल तक जाएगी।

कोरस २ : उस दिन सरकारी दफ़्तरों और कालेजों की छुट्‌टी कर दी गई थी।

कोरस ४ : पूरे शहर में साड़ियां और कंबल बंट रहे थे। और तो और दारू भी चल रही थी।

कोरस ५ : मैंने कहा–सुनो-सुनो। किसी ने राजा को देखा भी है? *;सभी पात्र 'नहीं-नहीं' कहते हैं।द्ध*

कोरस ६ : देखा किसी ने नहीं है। सिर्फ़ सुना ही सुना है।

कोरस १ : कजरी की अम्मा ने सुना था कि महाराज साढ़े छः फ़ुट के गबरू जवान हैं।

कोरस ७ : मेरी समधिन ने सुना था कि महाराज के मुखमंडल पर क्या तेज है।

कोरस ३ : हमारे महाराज कवि भी हैं।

कोरस ५ : एम.ए. फ़ाइनल के पाठ्यक्रम में उनकी कविता शामिल कर ली गई है। जिसका शीर्षक है–ढेंचू, ढेंचू, ढेंचू।

कोरस १ : कजरी की अम्मा के घर के पीछे वाली सड़क महाराज की बड़ी भौजाई की छोटी ताई के पिताजी के नाम रख दिया गया था।

कोरस २ : महाराज को राष्ट्रवीर-देशरत्न की उपाधि से अलंकृत किया गया था।

कोरस ४ : देश के जाने माने निर्देशक परमानंद दरिया को महाराज के जीवन पर धार्मिक फ़िल्म बनाने का कॉन्ट्रैक्ट मिला था।

कोरस ६ : उस फ़िल्म में हमारे महाराज का रोल पाने के लिए दुनिया भर के बड़े-बड़े एक्टरों में होड़ मच गई थी।

कोरस ५ : अंत में यह रोल मिला अमरीका के उस एक्टर को जिसने १५ बार मिस्टर यूनीवर्स का ख़िताब जीता था।

कोरस ३ : देश की जानी-मानी पॉप गायिका ने महाराज की कविता संग्रह पर एक रिमिक्स पॉप एलबम निकाला और उस एलबम के साथ एक बबलगम फ़्री।

कोरस १ : उस एलबम का जब वीडियो बना तो उसमें मिस यूनीवर्स, मिस वर्ल्ड, मिस एशिया पेसिफ़िक, मिस इंडिया, मिस राजधानी, मिस टाउन हॉल और मिस अशोक रोड भंगड़ा पा रही थीं।

कोरस २ : हमारे देश के बारह महान वैज्ञानिकों ने विज्ञान के क्षेत्र में महाराज के योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

कोरस ५ : महाराज स्तुति की रचना की गई। जिसकी वंदना करना, हर काम से पहले अनिवार्य था।

कोरस १ : लेकिन सच तो ये है, न ही कभी राजा प्रजा के सामने गया था और न ही प्रजा ने राजा को देखा था। इसीलिए जब राजा की सवारी निकलने जा रही थी तो पूरा शहर उमड़ पड़ा।

;सभी पात्र 'राजा की सवारी आ रही है, बाहर आ जाओ, देख लो,' का शोर।द्ध

कोरस : *;गानाद्ध* विशालकाय, विराट बु(र्, सर्वभुतेषू, शत्रुहंता राजा आ रहे हैं।
वज्रधारी, अजानबाहु, जाति गौरव, बल अनंता राजा आ रहे हैं।

;गाना ख़त्म होते ही दो सिपाहियों का प्रवेश। उनके हाथ में राजा की बड़ी-सी तस्वीर है। इस तस्वीर में राजा भव्य, सभ्य, सौम्य और शान्त मुद्रा में दिखाया गया है। राजा की वास्तविक छवि के साथ इस तस्वीर का मेल होना ज़रूरी नहीं है। जनता राजा की जगह केवल तस्वीर देख कर हैरान है।द्ध

कोरस : कहते थे, वह होगा हाड़-मांस का
लेकिन यह तो निकला गत्ते का, बांस का।
कहते थे वह होंगे उसके दसों आयाम
लेकिन यहां तो दो पर लगा हुआ है पूर्ण विराम।
कहते थे वह राजा की आवाज़ बड़ी निराली है,
लेकिन अब ख़ामोशी है न भाषण है, न ताली है।

कोरस : *;हँसते हुएद्ध* फिर पता है क्या हुआ? एक ऐसी घटना घटी जिसके बारे में किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था। *;गधा तस्वीर के सामने खड़ा होता है। लोग मज़ा लेते हैं।द्ध*

सिपाही : कोई आ के हटाओ इसे।

;सिपाही तरह-तरह की आवाज़ निकालकर उसे हटाने का प्रयत्न करता है। गधा उसे लात मारकर गिरा देता है।द्ध

सिपाही १: किसका गधा है यह? *;शोर मचता है।द्ध*

बुड्ढा : मेरा गधा है माईबाप, आ रहा हूं।

सिपाही १: तेरा गधा है।

बुड्ढा : जी माई बाप।

सिपाही १: अबे तो इसे पकड़कर रख। डेढ़ घंटा बरबाद कर दिया इसने। महाराज की सवारी नहीं निकलने दे रहा।

कोरस ४ : हां जी, जल्दी हटाओ इसे।

कोरस २ : मुझे काम पर जाना है। जल्दी करो।

बुड्ढा : मेरे बच्चे महाराज की सवारी निकल रही है। सिपाही भी साथ हैं। तू हट जा, हट जा।

;ज़ोर से हांकता है पर गधा नहीं हटता। सब कहते हैं ज़ोर लगाओ—ज़ोर लगाओद्ध

बुड्ढा : नहीं हटेगा हुज़ूर, नहीं माई बाप। बड़ा अड़ियल मिज़ाज है। एक बार अड़ जाए तो वहां से हिलने का नाम नहीं लेता।

सिपाही १: तुझे पता है यह महाराज की सवारी है। और हम महाराज के सिपाही। महाराज की सवारी के आगे अड़ना क़ानूनन जुर्म है।

बुड्ढा : लेकिन माईबाप यह तो गधा है।

सिपाही १: गधे पर क़ानून लागू नहीं होगा क्या। हमारे महाराज का गुस्सा बहुत ख़राब है। कोड़े मार-मारकर इसकी खाल उधेड़ देंगे। क्यों उस्ताद जी?

सिपाही २ : *;सोते हुएद्ध* हां ऽ ऽ ऽ ऽ

सिपाही १: इसे जेल में ठूंस देंगे। क्यों उस्ताद जी?

सिपाही २ : हां ऽ ऽ ऽ ऽ *;सभी पात्र सोते सिपाही की हां में हां मिलाते हैं।द्ध*

सिपाही १: इसके खाने में ज़हर मिला देंगे। क्यों उस्ताद जी?

सिपाही २ : हां ऽ ऽ ऽ ऽ *;सभी पात्र हां में हां मिलाते हैं।द्ध*

सिपाही १: इसे देश निकाला दे देंगे। क्यों उस्ताद जी।

सिपाही २ : हां ऽ ऽ ऽ ऽ *;सभी पात्र हां में हां मिलाते हैं।द्ध*

सिपाही १: और अगर यह फिर भी न माना तो इसी चौराहे पर, सबके सामने इसे फांसी पर लटका देंगे।

;सभी पात्र अचंभित रह जाते हैंद्ध

कोरस १ : फांसी!

पात्र २ : गधे को फांसी! पागल हो गए हो क्या।

;सभी पात्र आपस में बुड़बुड़ाते हैंद्ध

बुड्ढा : सुना नहीं तूने। सिपाही जी ने क्या कहा। हट जा मेरे बच्चे हट जा।

;गधा हटता हैद्ध

सिपाही १: देखा हमारे महाराज का प्रताप। हमारे महाराज के आगे तो अच्छे-अच्छों की हवा सरक जाती है, फिर यह तो गधा है।

;पात्र आपस में इसी बात पर बहस करते हैं कि गधा तस्वीर के आगे आएगा या नहीं। गधा तस्वीर के आगे फिर आ जाता है। सभी पात्र हँसते हैं।द्ध

सिपाही १: *;डांटते हुएद्ध* बड़ी हँसी आ रही है। कोलगेट की मशहूरी हो रही है! अगर फिर बत्तीसी दिखाई तो यहीं गाढ़ दूंगा।

कोरस : *;गानाद्ध* वह गौरव, वह वैभव, वह कीर्ति पताका
फीका सब रंग पड़ा जब सामने अड़ा गधा
वह राजसूय, वह अश्वमेध, वह घोड़ा दिग्विजय का
टट्टू सा है खड़ा जब सामने अड़ा गधा
वह धौंस, वह दबदबा, वह ख़ौफ़ सत्ता का
रह गया सब धरा-धरा, जब सामने अड़ा गधा
एक अदना सा गधा अड़ा, महज़ एक गधा अड़ा
बस वह अड़ात्र हां वह अड़ा
अड़ा-अड़ा-अड़ा—एक अदना सा गधा अड़ा।

सिपाही १: ख़ामोश! अगर यह तीन गिनने तक नहीं हटा तो यह है और हमारे उस्ताद जी। एक, दो, ;सभी पात्र गिनती सिपाही के साथ गिनते हैं। बुड्ढा गधे को उठाकर ले जाता है। सब हँसते हैं।द्ध
एक अदना सा गधा अड़ा...

;सभी पात्रों का प्रस्थान॰

बुड्ढा : हे भगवान कैसा अड़ियल गधा मेरे पल्ले पड़ेला
कैसा अड़ियल गधा मेरे पल्ले पड़ेला
रहने को यह मांगे इक बड़ा तबेला
खाने को यह मांगे है गजरेला
कमाके न यह लाए एक भी धेला
रोज़-रोज़ करता है ये नया झमेला...।

;बुड्ढे का गधे के साथ प्रस्थान। राजा और मंत्रियों का प्रवेश॰

मंत्री २ : महाराज देशभर के ५२६ प्रादेशिक भाषाओं के अख़बारों के संपादकीय में आपके और गधे के चुटकुले छपे हुए हैं।

मंत्री ५ : हमें गुप्तचरों से पता लगा है महाराज, आपके ख़िलाफ़ हँसी उड़ाओ जेहाद शुरू हो चुका है।

मंत्री ३ : महाराज जो गधा आपकी तस्वीर के सामने अड़ गया था वो तस्वीर इंटरनेट पर आ चुकी है और हज़ारों लाखों लोग उसे डाउनलोड कर रहे हैं।

मंत्री ४ : महाराज सर्वे के हिसाब से देश में ७५.८६ प्रतिशत लोग आप की छवि को देखकर हँस रहे हैं। और २.४५ प्रतिशत लोग नहीं हँस रहे हैं और बाक़ी लोग कह रहे हैं□'की फ़रक पैंदा है जी'।

मंत्री १ : महाराज केतू सूरज के कंधो पर सवार हो चुका है और सूरज के सातों घोड़े गधों में तब्दील हो चुके हैं। वो ठहाका लगा के हँस रहे हैं□ढेंचू-ढेंचू-ढेंचू ।

गधाधर : हँसी-हँसी-हँसी। हमारे ही राज्य में हमारी ही हँसी। हमारी जनता हम पर हँस रही है। हमारी प्रजा हम पर हँस रही है। छोटे-छोटे बच्चे जिनके दूध के दांत नहीं टूटे हैं हमारी तस्वीर में हमारी मूंछों से खिलवाड़ करते हैं।

गुरु गोल : आर्य गधाधर अपने राज्य में हँसने पर पाबंदी लगा दो।

गधाधर : आज से इस राज्य में हँसने पर पाबंदी है।

सभी मंत्री: आज से इस राज्य में हँसने पर पाबंदी है।

गधाधर : लेकिन समस्या अब भी वहीं की वहीं है कि क्या हमारी हँसी की वजह एक गधा था। एक छोटा सा अदना सा गधा। महज़ एक गधा। एक गधे की वजह से हमारी इतनी हँसी। जाओ जाकर पता लगाओ वह गधा था कौन।

मंत्री ४ : महाराज जहां तक मैं समझता हूं वह एक गधा था महाराज। *;सभी मंत्री उसे पागल, बेवकूफ़ कहते हैं॰*

गुरु गोल : वह गधा कतई गधा नहीं था। वह एक सोची समझी साज़िश का हिस्सा था। हमें पता लगाना होगा कि वह किसकी साज़िश है। हमें गधे की गतिविधियों पर नज़र रखनी होगी, देखना होगा वह कहां जाता है, किससे मिलता है, कब मिलता है। हमें गधे की पूंछ बनना पड़ेगा। गधे की पूंछ बनने का महान काम मैं तुम्हें *;मंत्री ३ को॰* सौंपता हूं।

मंत्री ३ : गुरु गोल मैं धन्य हो गई। मैं गधे की पूंछ बनने को तैयार हूं लेकिन अगर मैं गधे की पूंछ बन गई तो महाराज का क्या होगा? इसीलिए गधे की पूंछ यह बनेंगी। *;मंत्री २ की ओर इशारा करता है॰*

मंत्री २ : यह बनेंगे। *;मंत्री १ की ओर इशारा करता है॰*

मंत्री १ : यह बनेंगे। *;मंत्री ४ की ओर इशारा करता है॰*

मंत्री ४ : यह बनेंगे।

;कोई मंत्री राज़ी नहीं होता। मंत्री ५ रुआंसा होकर कहता है॰

मंत्री ५ : गुरु गोल मैं गधे की पूंछ बनने को तैयार हूं। लेकिन असली समस्या तो है□लोगों का राजा के ऊपर हँसना। उसका क्या कारण है गुरु गोल?

गुरु गोल : उसका कारण है महाराज की वह छवि जो तुम गधों ने बनाई थी। *;सभी मंत्री एक-दूसरे पर आरोप लगाते हैं॰* एक छवि जिस पर जनता हँसने की जुर्रत कर सकी। एक छवि जिसमें उसकी तलवार म्यान के भीतर है। एक छवि जिस पर जनता हँस सकी क्योंकि वह बहुत सौम्य है, कोमल है, उदार है। अरे मूर्खो तलवार की जगह होती है हाथ में, दुश्मन के शीश पर। हमारी चिंतन बैठक में यह निर्णय लिया गया है कि महाराज की ऐसी विकराल छवि बनाई जाएगी, जिसे देखकर जनता खुद ब खुद नतमस्तक हो जाएगी। जिसे देखकर तीनों लोक त्राहिमाम कर उठें, ऐसी विकराल छवि मैं तुम्हें दिखाता हूं। *;नई छवि लाई जाती है। सभी मंत्री वाह-वाह करने लगते हैं॰*

मंत्री १ : क्या डोले हैं महाराज के

मंत्री २ : क्या मूंछें हैं

मंत्री ३ : इसे कहते हैं युग पुरुष, राष्ट्र नायक की छवि। बिल्कुल हीमैन है।

मंत्री ४ : हीरो कहिए हीरो।

;इसमें राजा उग्र, रौद्र और आक्रमक रूप में दिखाया गया है। उसकी तलवार म्यान में नहीं, उसके हाथ में है॰

गधाधर : गुरु गोल हम निञश्चत हो गए। अब हमें कोई चिंता नहीं। हमारा ताज, हमारे सिर से कभी नहीं फिसलेगा। हम निञश्चत हो गए।
हो गए हम निञश्चत□हो गए हम निञश्चत
गुरुजी लगा के नकली मुछवा
हो गए हम निञश्चत गुरु जी गधे की बन के पुछवा
हो गए हम निञश्चत, कि अब तो घास-गधे की यारी
भैंस अक़्ल पे भारी□पड़ गई

असल गए सब भूल□नक़ल को किया क़ुबूल
हो गए हम निञश्चत□हो गए हम निञश्चत

;राजा और मंत्रियों का प्रस्थान। सिपाहियों का प्रवेश।ध्र

सिपाही १: उस्ताद जी, ओ उस्ताद जी। उस्ताद जी चलो महाराज की छवि अश्वमेध चौक पर लगानी है। यह तो फिर सो गए। *;उस्ताद को झकझोरता हैध्र* उस्ताद जी महाराज को पता चला तो वह हमको नौकरी से निकाल देंगे। हे भगवान इनके साथ मेरी ड्यूटी मत लगा। हे भगवान - बचा ले। सवा पांच रुपए का प्रसाद चढ़ाऊंगा। *;गधे और बुड्ढे का आगमनध्र* अरे वाह भगवान बड़ी जल्दी प्रसन्न हो गए। *;बुड्ढे सेध्र* ऐ बुड्ढे। इधर आ।

बुड्ढा : जी हुज़ूर।

सिपाही १: महाराज की छवि अश्वमेध चौक पर पहुंचानी है।

बुड्ढा : ज़रूर पहुंचाऊंगा हुज़ूर। *;गधे सेध्र* चल मेरे बच्चे। लदाई मिली है। अश्वमेध चौक तक जाना है। जल्दी कर-जल्दी कर। *;गधे पर तस्वीर लादता है।ध्र* ए-ए-संभल के। आ जा,....।

सिपाही १: बड़ा समझदार है तेरा गधा।

बुड्ढा : मेरा अरबी गधा है। चल मेरे बच्चे। अरे! तू फिर अड़ गया। देख मेरे बच्चे, तू बार-बार न अड़ा कर। तेरे इस तरह अड़ने से ही तो कमाई का सत्यानाश होता है। ऐसे ही अड़ा रहा तो भूखों मरने की नौबत आ जाएगी। खाने को कहां से लाकर दूंगा तुझे। *;चलते हैं, सवारी निकलती है।ध्र;सभी पात्र अचंभे में, तस्वीर की तारीफ़ करते हैं।ध्र*

कोरस : ए कजरी की अम्मा देख महाराज की नई तस्वीर आई है। हाय बड़ी ख़ूबसूरत है। क्या मूंछें हैं। डोले तो देखो। कितने ख़ूबसूरत हैं। महाराज की जय हो।

सिपाही १: सुनो, सुनो, सुनो! आज से इस राज्य में हँसने पर पाबंदी है।

कोरस : कमाल है। हँसने पर कैसे पाबंदी लग सकती है। कजरी की अम्मा हँसने पर पाबंदी है। अपना मुंह बंद रखा कर।

कोरस १ : हँसने पर पाबंदी कैसे लग सकती है!

कोरस २ : हँसने पर पाबंदी है।

कोरस १ : नहीं है।

कोरस २ : है।

;सिपाही २ पात्र १ के चांटा मारता है। सन्नाटा छा जाता है।ध्र

सिपाही १: जो कोई इस राज्य में हँसता हुआ देखा गया, मुस्कुराता पाया गया या हँसने के बारे में सोचता भी पाया गया तो उसे तीन महीने क़ैदे बामुशक्कत और पांच हज़ार रुपए जुर्माना देना होगा।

कोरस ३ : कजरी की अम्मा। हँसने पर पांबदी-तीन महीने की क़ैद और पांच हज़ार रुपए जुर्माना। अरी दरवाज़ा बंद करके भीतर चली जा न मुई। *;सभी पात्रों का प्रस्थान। इस पूरे सीन में जासूस गधे के पीछे-पीछे घूमता रहता है।ध्र*

बुड्ढा : माईबाप मेरे लदाई के पैसे तो दे दो।

सिपाही १: अबे तू गया नहीं अब तक। भाग यहां से।

बुड्ढा : देखा मेरे बच्चे। हँसने के ऊपर पाबंदी लगा रहे हैं मैं तो कहता हूं रोने के ऊपर पाबंदी लगा दें। ठीक है मैं भी यहीं बैठा हूं। देखता हूं कैसे नहीं देते पैसे। *;रात होती है।ध्र*

सिपाही १: सो गया। साला, सुबह से दो रुपए के लिए चिपका हुआ है। रात के बारह बज रहे हैं। घर जाके सो। सारी जनता सो गई। एक हम ही पागल हैं, जो चौकीदारी में लगे हैं, और ठंड, ठंड का बहुत बुरा हाल है। ठंड में तो मेरा मूत भी जम गया और हमारे उस्ताद जी हैं। हर पांच मिनट में लीक होते रहते हैं। *;उस्ताद जी पेशाब करने जाते हैं।ध्र* उस्ताद जी। चलो, महाराज की चौकीदारी करनी है। *;बूढ़ा उठकर सिपाहियों के पास आता है।ध्र*

बुड्ढा : माई बाप मेरे लदाई के पैसे दे दो।

सिपाही १: तू गया नहीं यहां से। भाग यहां से

;गधा सिपाहियों के सामने आता है। सिपाही घबरा जाते हैं। जासूस हकबकाता है। भगदड़ मच जाती है। इस हड़बड़ाहट में सीढ़ी गिर जाती है। सिपाही सीढ़ी खड़ी करते हैं लेकिन तस्वीर उल्टी टांग देते हैं। सिपाही जाते हैं। बुड्ढा उनके पीछे 'मेरे पैसे-मेरे पैसे' कहकर प्रस्थान करता है साथ में गधा भी।ध्र

कोरस : वह तलवार, वह मूंछें, वह डील डौल राजा का
उल्टा-पुलटा, अटपटा, ठेंगा दिखा भागा गधा
वह भंगिमा, वह तेवर, वह रौद्र रूप राजा का
हो गया रफ़ा-दफ़ा, यदा-यदा भागा गधा
यदा-यदा भागा गधा
बस वह गधा, हां वही गधा
यदा-यदा-यदा, भागा गधा

;सुबह होती है। शहरी अपने कामों में व्यस्त हैं। एक एक कर के सबकी नज़र उल्टी तस्वीर पर जाती है। मज़ाक करते हैं। तस्वीर को देखकर सभी हँसते हैं। जासूस छुप के सब कुछ देखता है। तस्वीर हटाई जाती है। सबका प्रस्थान। मंत्रिओं का प्रवेश। मंत्री हँसी को लेकर खुसर-पुसर कर रहे हैं।ध्र

गधाधर : हँसी, हँसी, हँसी! गुरु गोल ऐसा क्यों होता है? हम कुछ भी करें हमारा ताज बड़ा का बड़ा रहता है। हमारा सिर और छोटा होता जाता है। ऐसा क्यों होता है? सोचो।

मंत्री ५ : महाराज आपके ताज में कोई खराबी है। जो ताज आपके सिर पर फ़िट न आ सके वो ठीक कैसे हो सकता है।

गुरु गोल : ख़ामोश। यह प्राचीनतम देश का महानतम ताज है। इसमें कोई दोष नहीं हो सकता।

मंत्री ४ : गुरु गोल अगर ताज में खोट नहीं है तो महाराज के सिर में अवश्य कोई खोट होगा। महाराज का सिर बहुत छोटा है।

मंत्री ३ : कितना क्यूट है।

गुरु गोल : ख़ामोश। राजा सोलह कला संपूर्ण होता है। साक्षात ईश्वर। सर्वथा दोषमुक्त।

मंत्री ५ : गुरु गोल अगर यह ताज भी ठीक है, महाराज भी ठीक हैं तो समस्या कहां पर है?

गुरु गोल : समस्या है वह गधा। हमें उस गधे का कोई इलाज ढूंढ़ना पड़ेगा। परमानैंट इलाज।

गधाधर : कहां है गधा? पकड़ के लाओ उस गधे को। हम करेंगे गधे का परमानैंट इलाज। हम गधे को परमानेंटली जान से मार डालेंगे।

गुरु गोल : मगर ध्यान रहे वह गधा अब केवल गधा, महज़ गधा नहीं रहा। उसने जनता को हँसाया है। यानी बग़ावत के लिए उकसाया है। हमें देखना होगा कि हम उसे मार तो दें पर वह शहीद न हो। *;सभी मंत्री वाह-वाह करते हैं।द्ध*

गधाधर : मार भी दें और शहीद न कहलाए? ऐसा कैसे होगा गुरु गो ल?

मंत्री ४ : ऐसा हो सकता है महाराज वो गधा शहीद नहीं होगा। इतिहास साक्षी है महाराज। इस देश के साथ गद्दारी करने वाला कौन था?

गधाधर : कौन था?

मंत्री १ : गधा महाराज।

मंत्री ३ : महाराज याद कीजिए, आज से पांच हज़ार नौ सौ निन्यान्वे साल पहले जब आपके पूर्वज यज्ञ कर रहे थे तो उस वक़्त ढेंचू-ढेंचू करने वाला कौन था?

गधाधर : कौन था?

मंत्री ३ : गधा महाराज।

मंत्री २ : महाराज आज से तीन हज़ार चार सौ पचपन साल पहले आपके कुल देवता के मंदिर से प्रसाद चुराने वाला कौन था?

गधाधर : कौन था?

मंत्री २ : गधा महाराज।

मंत्री ५ : महाराज आप हाल ही की बात लीजिए न। आपकी बड़ी भौजाई की छोटी ताई के पिताजी को जब लकवा मार गया था तो उनके स्वप्न में कौन आया था?

गधाधर : कौन आया था?

मंत्री ५ : गधा महाराज।

मंत्री ४ : महाराज, ऐसा कौन सा जानवर है जो हमारी परंपराओं में हमेशा से ही अशुभ माना गया है?

गधाधर : कौन सा जानवर?

मंत्री ४ : गधा महाराज। और ऐसा कौन सा जानवर है जो किसी भी भगवान का वाहन नहीं होता?

गधाधर : गधा महाराज।

मंत्री ४ : हां, गधा महाराज!

गुरु गोल : हमें अति प्रसन्नता है कि तुमने इतिहास का इतना गहन अध्ययन किया है।

मंत्री गण : धन्यवाद।

गुरु गोल : आपकी पढ़ाई, खुदाई और तुड़ाई से जो तथ्य सामने आए हैं उनसे यह सि(होता है कि गधा कभी भी इस देश का मूल निवासी नहीं था। अब प्रश्न है देश के गौरव का, प्रश्न है देश की अस्मिता का। प्रश्न है देश की परंपराओं का। एक विदेशी आता है और हमारी परंपराओं पर हँसता है। क्या हम इसे सहन करेंगे?

मंत्री गण : कभी नहीं।

गुरु गोल : हम हँसने वाले के चेहरे से हँसी छीन लेंगे। उसे नेस्तनाबूद कर देंगे। हमारे विरोधी कुछ भी कहते रहें उस पर ध्यान न देना। हम यह ऐलान करते हैं कि गधा, राष्ट्र का दुश्मन है, और जो राष्ट्र का दुश्मन है।

गधाधर : वह राष्ट्र के नायक का दुश्मन है।

मंत्री ३ : वह हमारे धर्म का दुश्मन है।

मंत्री २ : वह हमारी संस्कृति का दुश्मन है।

मंत्री ४ : वह हमारी परंपराओं का दुश्मन है।

मंत्री १ : वह हमारी सभ्यता का दुश्मन है।

मंत्री ५ : वह हमारी विरासत का दुश्मन है।

मंत्रीगण : वह इसका दुश्मन है। वह उसका दुश्मन है। वह सबका दुश्मन है। *;मंत्रीगण, गुरु गोल का प्रस्थान। राजा का भाषण।द्ध*

गधाधर : गधा दुश्मन है। राष्ट्र का दुश्मन, परंपराओं का दुश्मन, सभ्यता का दुश्मन, संस्कृति का दुश्मन। गधा कभी भी इस देश का मूल निवासी नहीं था। गधों ने सदा इस देश के साथ ग़द्दारी की है। गधे को ख़त्म करो। उसे मिटाओ, ख़त्म करो, नेस्तनाबूद करो। *;राजा के भाषण के दौरान लोग आते हैं। राजा का प्रस्थान।द्ध*

कोरस ३ : अश्वमेध चौक से जब महाराज की उल्टी-पुल्टी तस्वीर उतारी गई तो उसे देखने के लिए वहां लोगों की भीड़ जमा हो गई।

कोरस २ : लेकिन जल्द ही पुलिस वालों ने डंडे बरसाकर भीड़ को

तितर-बितर कर दिया।

कोरस १ : मैंने तीन तीन बार कजरी की अम्मा को आवाज़ दी पर वह एक बार भी खिड़की पर न आई।

कोरस ४ : स्कूल और कॉलेजों में भी उस दिन छुट्टी कर दी गई।

कोरस ६ : शाम के अख़बार में इस घटना का कोई ज़िक्र नहीं था बल्कि महाराज की बड़ी सी तस्वीर के साथ उन्हीं की एक कविता छपी थी।

कोरस ५ : लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे। कोई कह रहा था तुर्कमान गेट पर दंगा भड़क गया है। कोई कह रहा था इमरजेंसी लगने वाली है।

कोरस ६ : शाम तक पूरे इलाक़े में सन्नाटा छा गया था।

कोरस ७ : शाम को अश्वमेध चौक पर उस दिन एक भी फेरी वाला न था।

कोरस ४ : लोग अपने-अपने घरों में दुबके पड़े थे।

कोरस १ : फिर एक ऐसी घटना घटी जिसके बारे में किसी ने सपने में भी न सोचा था। *;पीछे एक लाइन में दर्शकों को पीठ करके कोरस बैठा है। बुड्ढा और गधा प्रवेश करते हैं।द्ध*

बुड्ढा : *;गधे सेद्ध* चल मेरे बच्चे। ओस गिरने से पहले अपने घर पहुंच जाते हैं। चल जल्दी कर *;सिपाही आते हैं।द्ध*

सिपाही १: उस्ताद जी वही बूढ़ा और गधा।

बुड्ढा : माईबाप मेरे लदाई के पैसे तो दे दो। *;सिपाही बूढ़े और गधे को मारते हैं। फिर गधे को फांसी पर चढ़ाते हैं। बुड्ढा रोता है।द्ध* हुज़ूर मार काहे को रहे हो। मैं तो अपने लदाई के पैसे मांग रहा हूं। कोई मेरे बेटे को बचाओ। मेरे बच्चे को छोड़ दो। कोई मेरे बच्चे को बचा लो। बचाओ□मेरे लाल को बचाओ। मत मारो उसको। छोड़ दो।

सिपाही १: बताओ जी! गधे को फांसी पर लटकाना पड़ा। कोई क्रांतिकारी होता तो बात समझ भी आती। चलो उस्ताद जी। *;कोरस आगे आता है। गाना।द्ध*

यह तो गधा है अड़ियल इसका मिज़ाज
जैसे पानी में नमी, जैसे आग में तपिश
जैसे परों में परवाज़, जैसे ज़हन में सोच
यह जो मारा गया हम भी बचेंगे नहीं
हम तो इंसां हैं सांस लेते हैं हम
जैसे पानी में नमी, जैसे आग में तपिश
जैसे परों में परवाज़, जैसे ज़हन में सोच
वह तो गधा था जो मारा गया
हम तो इंसां हैं, हम बचेंगे नहीं।

कोरस ३ : अजब नज़ारा था। अश्वमेध चौक पर, जहां टंगी रहती थी महाराज की तस्वीर, टंगी थी गधे की लाश।

कोरस २ : चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था।

कोरस १ : सबसे पहले कजरी की अम्मा ने लटकी हुई लाश को देखा।

कोरस ४ : धीरे-धीरे लोग चौक पर जमा होने लगे।

कोरस ५ : बूढ़ा बेहोश था। किसी ने उसे पानी पिलाया।

कोरस ६ : उस के सिर से ख़ून बह रहा था। किसी ने अपने गमछे से पट्टी बांधी।

कोरस १ : बूढ़ा सिर्फ़ एक ही बात बड़-बड़ा रहा था। वह तो गधा था उसको क्यों मारा□वह तो गधा था उसको क्यों मारा?

बुड्ढा : *;रोता है।द्ध* मेरे गधे को क्यों मारा? क्यों मारा मेरे बच्चे को?*;कोरस बूढ़े को घेर लेता है। गाना।द्ध*

कोरस : वह तो गधा था जो मारा गया।
हम तो इंसां हैं हम बचेंगे नहीं।
हम तो इंसां हैं सोच सकते हैं हम
हम तो इंसां हैं बोल सकते हैं हम
जैसे पानी में नमी, जैसे आग में तपिश
जैसे परों में परवाज़, जैसे ज़हन में सोच
हम तो इंसां हैं सोच सकते हैं हम
हम तो इंसां हैं बोल सकते हैं हम
हम मिटेंगे नहीं, हम मिटेंगे नहीं
हम मिटेंगे नहीं, हम मिटेंगे नहीं।

o